हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-६ अङ्क-५ दिसम्बर, २००९

सम्पादकीय

विश्व-धर्मों के संसद की महासभा

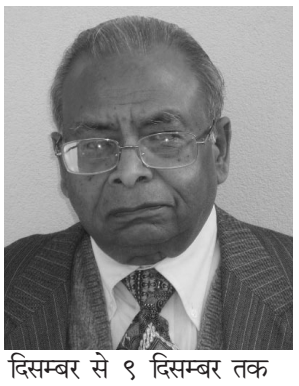

सबसे पहले विश्व-धर्मों के संसद (पार्लियामेंट आफ़ द वर्ल्डस् रिलीजन्स) की महासभा १८९३ में शिकागो में हुई थी जिसमें स्वामी विवेकानंद ने अपने वक्तव्यों और भाषणों से अमेरिका में धूम मचा दी थी। इस महासभा की शताब्दी पर एक बार फिर इस संसद की महासभा १९९३ में शिकागो में हुई जिसमें भारत के संत श्री आशा राम जी बापू ने भाग लिया और अपने भाषण से लोगों का मन मोह लिया। इस महासभा में पर्यावरण पर विशेष रूप से धर्मगुरुओं के बीच विचार-विनिमय हुआ और 'ए सोर्सबुक फ़ार द कम्युनिटी आफ़ रिलीजन्स' नामक पुस्तक प्रकाशित की गयी जो धर्म-शिक्षा की पाठ्य-पुस्तक बन गयी है। अगली महासभा १९९९ में दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन नामक शहर में हुई। इस महासभा में विश्व की अनेक समस्याओं के बारे में विचार-विमर्श किया गया और 'गिफ्टस् आफ़ सरविस टू द वर्ल्ड' नामक एक और पुस्तक प्रकाशित की गयी, जिस में उन ३०० प्रायोजनाओं का वर्णन है, जिन्होंने विश्व में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस वर्ष, यह महासभा मेल्बर्न, ऑस्ट्रेलिया में ३ दिसम्बर से ९ दिसम्बर तक आयोजित हुई। इस महासभा में विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिन में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बुद्ध, बहाई आदि सम्मिलित थे। विभिन्न धर्म-गुरुओं के आपस में मिलकर परस्पर विचार-विनिमय करने से एक दूसरे का दृष्टिकोण और एक-दूसरे को समझने में मदद मिलती है। यह विश्व-शांति के लिये मूल्यवान योगदान दे सकता है। क्रिसमस के अवसर पर, जब लोग विश्व-शांति की कामना करते हैं- यह अच्छा संकेत है। सभी पाठकों को बड़ा दिन मुबारक़ हो और नव वर्ष की शुभ-कामनाएँ आप सबके जीवन में २०१० सुख, शांति और समृद्धि लाये।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में कुछ रोचक कविताएँ हैं। इसके अतिरिक्त, क्रिसमस पर एक लेख है बच्चों और 'पदोन्नति' नामक कहानी का पहला भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ स्तम्भ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।

खिलौने लाएगा सान्ता

- हरिहर झा, मेल्बर्न

बच्चों के खिलौने लायेगा सान्ता
मासूम हँसी में भायेगा सान्ता
जाने क्यों घरौंदे तकते हैं राहें
चिमनी से उतर कर आयेगा सान्ता

बच्चियाँ अकेली गुमसुम हो खोईं
सबके दिलों पर छायेगा सान्ता
रो रोकर उदासी, खुद होती चिथड़े
मस्ती के तराने गायेगा सान्ता

मोती जो ढुलकते आँखों से दिल में
मालाएँ पिरोता जायेगा सान्ता
दाढ़ी से शरारत करती वह भोली
प्यारी सी चपत दे पायेगा सान्ता

इशारा-ए-बुढ़ापा

(तारीफ़ उस खुदा की तर्ज़ पर)

-डा० सैफ़ चोपड़ा, मेल्बर्न

जीवन सफ़र का,
मुझको आया नज़र किनारा
उम्रे दराज़ से आया,
इस बार का इशारा

तब्दीली यह बदन में,
वक़्त ने हमें दिखाई
कम होती जा रही है,
सेहत की यह कमाई

बालों में यह सफ़ेदी,
करती रही इशारा
चाहा इसे छुपाना,
आख़िर में मैं हारा

आइने में हमने देखा,
बढ़ी हुई यह झुर्रियाँ
याद आई फिर जवानी,
और मन हुआ दुखिया

आँखों का नूर मेरा,
कमज़ोर हो रहा है
यह मोती कैटरैक्ट का,
आँखों में बस रहा है

दाँतों का कारवाँ भी,
देखो बिखर रहा है
मुँह में दबा कर पीसना
मुश्किल हो रहा है

पिस्ता, बादाम, रोटी,
दाँतों को न गवारा
हलवा हो या फ़ालूदा,
लगता है मुझको प्यारा

होने लगा पुराना,
कान का मेरा यह परदा
लोगों का अब चिल्लाना,
लगता है जैसे झगड़ा

घूमने लगी है दुनिया,
दिमाग़ में वह ख़राबी
पीता नहीं हूँ ,
लेकिन लगता हूँ शराबी

काव्य-कुंज

सुस्ती मेरे जहाँ की,
औरों को न गवारा
याददाश्त हो गयी कम,
क्या नाम है तुम्हारा?

उठने भी नहीं देता,
घुटने का दर्द हमारा
पाँवों को आज प्यारा,
लकड़ी का यह सहारा

मेरे मर्ज़ की दवाई,
हर सूँ नज़र है आये
खाने का अब मज़ा और,
गोली जो साथ खाये

रहता है घर में अक्सर,
बीमार बदन हमारा
दोस्तों की है शिकायत,
दीदार कम तुम्हारा

खून की रवानी है कम,
दिल पर हुआ है 'बाई-पास'
धड़कन में अब नया ज़ोर,
जीने की अब नयी आस

कमज़ोरी ये गले से,
आवाज़ में ज़ोर न आया
बेसुर हो गया हूँ ,
गाया तो शोर मचाया

यह बॉलीवुड का शौक़,
लगता है आज पराया
सूफ़ियाना गीत से अब,
दिल को सुकून है आया

झुकने लगी है कमर सैफ़,
नज़दीक़ अब ज़मीन है
शायद दुआ में है ज़ोर,
रब मेरा आज क़रीब है

गुंडा-राज

- पराशर गौड़, कनाडा

मैंने देखा, सबने देखा
हमने देखा
हिन्दी को अपमानित होते हुए
अपने से नहीं, अपनों से
महाराष्ट्र की विधान-सभा में
सबके सामने, सबके आगे
भरी सभा में, द्रौपदी की तरह!

वह रोई नहीं
न सड़क पर, न चौराहे पर.
वह रोई जहाँ क़ानून बनते हैं,
लागू होते हैं!

वह गिड़गिड़ाई
इस युग के सभ्य
कहे जाने वाले इंसानों के आगे,
जो सब मौन थे
महाभारत के
भीष्म पितामह की तरह!

वे बस १३ थे
कहने को तो वे न तो
तीन में न तेरह में थे
कहने को वे
अपने को नेता कहते थे
पर नेता कम,
गुंडे ज़्यादा लगते थे।
अक़्ल से, शक़्ल से
काम से
जातिवाद के कंस की तरह!

हाथापाई, गुंडागर्दी, मारधाड़
जो कल तक सड़कों पर करते थे
आज विधान-सभा में कर रहे हैं
बिना झिझक, बिना रोके,
सबके सामने, सरे आम
माइक तोड़ते हैं, थप्पड़ जड़ते हैं
वह भी एक चुने हुए उम्मीदवार पर
जो राष्ट्र को गौरवान्वित करते हुए,
हिंदी में शपथ ले रहे हैं
हिंदी के नाम पर
एम०एन०एस० के चंद मवाली
उस व्यक्ति के साथ
मारा-मारी कर रहे हैं

इस कांड के पीछे ज़रूर कोई है
जो कर रहा है, करवा रहा है
यह क्या हो रहा है?
यह गुंडा-राज नहीं तो
और क्या है??

क्रिसमस का त्योहार

क्रिसमस का त्योहार, ईसाई-धर्म के प्रवर्तक, ईसा मसीह के जन्म-दिवस के रूप में मनाया जाता है। विश्व के अधिकतर देशों में यह त्योहार, २५ दिसम्बर को मनाया जाता है, परन्तु ईसाई धर्म के कुछ अनुयायी इसे ७ जनवरी को मनाते हैं क्योंकि ईसामसीह के जन्म-दिन के बारे में मतभेद है। दिसम्बर के प्रारम्भ में, और कहीं-कहीं नवम्बर के अंत से ही क्रिसमस की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। दुकानें और बाज़ार सजाये जाने लगते हैं, घरों की सफ़ाई-पुताई होने लगती है। घर-बाहर रंग-बिरंगे फूल-पत्तियों द्वारा सजाये जाते हैं। जगह-जगह पर, ईसामसीह के जन्म के दृश्य दिखाये जाते हैं और उनके जीवन पर आधारित नाटिकाएँ प्रदर्शित की जाती हैं। २४ दिसम्बर की रात्रि को १२ बजे, गिरजाघरों में विशेष समारोह आयोजित किये जाते हैं। बाद में अपने परिवार के साथ लोग मिल-जुलकर खाना खाते हैं और आनंद मनाते हैं। विशेष प्रयत्न किया जाता है कि इस दिन कोई अकेला न रहे। सभी सम्बन्धी, इस दिन आपस में मिलने का प्रयत्न करते हैं। चारों ओर वातावरण, क्रिसमस के संगीत से गूँज उठता है। घरों व बाज़ारों में क्रिसमस के पेड़ लगा कर सजाये जाते हैं। पेड़ों के नीचे, उपहार रखे जाते हैं। लोग एक जगह एकत्रित हो कर, एक साथ क्रिसमस के गीत गाते हैं। इस समय बच्चों को खिलौने देने तथा ग़रीबों को दान देने की भी प्रथा है। लाल सूट पहने, लम्बी-लम्बी सफ़ेद दाढ़ी वाले सांता-क्लॉज़, घंटी बजा कर 'हो-हो' करते हुए आपको कई जगहों पर दिख जायेंगे। बच्चे भी उनकी गोद में बैठ कर, अपनी फ़ोटो खिंचवा कर बहुत प्रसन्न होते हैं। इस त्योहार पर एक-दूसरे को शुभ-कामनाएँ भेजने का भी प्रचलन है। लोग एक-दूसरे के लिये सुख-शांति और समृद्धि की कामना करते हैं और पृथ्वी पर शांति की प्रार्थना करते हैं। यद्यपि यह ईसाइयों का त्योहार है, तथापि, इस त्योहार के हर्ष व उल्लास के वातावरण में अन्य धर्मों के लोग भी सम्मिलित होते हैं। दुर्भाग्यवश, इस त्योहार का इतना अधिक व्यापारीकरण हो गया है कि अधिकांश लोग, उपहार और बाहरी आडम्बरों में फँस कर, क्रिसमस का मुख्य उद्देश्य-सौहार्द, भाईचारा, प्रेम तथा ईसामसीह की शिक्षाओं का पालन करना भूल जाते हैं।

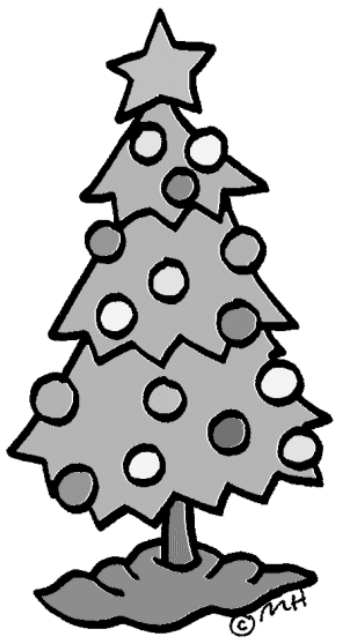

कहानी

पदोन्नति* (भाग १)

-श्रीनिवास वत्स

सुनन्दन बाबू अपनी पदोन्नति से जितना प्रसन्न थे, उससे कहीं अधिक खुशी उनकी पत्नी एवं बच्चों के चेहरों से झलक रही थी। कितने दिन यूँ घुट-घुटकर काट दिए। सामने वाले चौबे जी के मकान में जो लेखा अधिकारी रहता है, उसकी पत्नी बात-बात में अफ़सरी का रोब झाड़ती रहती थी। दोपहर में धूप सेंकने के लिए पास-पड़ोस की सभी औरतें जब चौबे जी के घर के बाहर लॉन मे बैठ जातीं थीं तो चाय की चुस्कियों के बीच मकान मालिक और किराएदार का भेद मिट जाता था। चौबे जी सरकारी ठेकेदार हैं। अच्छा पैसा कमा लिया है। पूरे मुहल्ले में उनकी अव्वल कोठी से यही प्रदर्शित होता है।

रस्तोगी जी बैंक में लेखाकार हैं और चौबे जी के बगल वाले मकान में किराएदार हैं।

श्रीमती गिरिजा जैन अपने पति के पद से ज्यादा उनके मधुर स्वभाव से संतुष्ट हैं। जैन साहब हायर सेकेंडरी स्कूल में विज्ञान के अध्यापक हैं। स्कूल से अधिक समय बच्चों को घर पर देते हैं। ट्यूशन से होने वाली प्रचुर आय के साथ-साथ घरेलू कार्यों में मीन-मेख निकालने की फ़ुर्सत नहीं मिलती, इसी कारण श्रीमती जैन स्वयं को भाग्यशाली मानती हैं। दिन-भर महिला मंडली में बैठ गप्पें हाँकने का पूरा आनंद उठा लेती हैं।

आर्थिक दृष्टि से सुनंदन जी का परिवार सबसे कमज़ोर था। बेचारे सरकारी कार्यालय में हिंदी अनुवादक हैं। वेतन के सिवाय टके भर की ऊपरी आमदनी का कोई अवसर नहीं। तिस पर चार बच्चों का बड़ा परिवार। इस महँगाई में आख़िर काम कैसे चले? बड़ी दो लड़कियाँ हैं। उनकी शादी के लिए अभी से बहुत कुछ नहीं बचाया तो आगे क्या करेंगे? ऐसे में श्रीमती सुभद्रा के लिए हर माह घाटे का बजट बनाने की विवशता रहती। बेचारी पिछले पाँच माह से अपने लिए एक भी नई साड़ी नहीं ख़रीद पाई हैं। सुनन्दन जी ने पिछले सर्दियों में साठ रुपये का एक पुराना कोट सोमवार को लगने वाले बाज़ार से खरीदा था, उसी को ड्राईक्लीन करा कर दफ़्तर पहनकर जाते हैं।

महँगाई का जिक्र चलते ही एकाउंट्स अफ़सर की पत्नी अपना रोना लेकर बैठ जाती- "अजी! मँहगाई का सबसे ज़्यादा असर तो हम लोगों पर ही पड़ा है। समाज में अफसरों वाला स्टेटस बना कर रखना पड़ता है॥ वेतन तो उतना बढ़ता नहीं। हमसे तो छोटे बाबू अच्छे। कैसे भी रह लो, कोई कभी नहीं टोकता। पर यहाँ तो ज़रा-सा कमज़ोर कपड़ा पहना या बच्चों को हिंदी माध्यम वाले सरकारी स्कूल में डाल दिया तो अपने ही रिश्तेदार कटाक्ष करने लगेंगे- अरे भाई! अफ़सर हो तो अफ़सरों की तरह रहो।"

श्रीमती सुभद्रा जानती थीं कि ये सब बातें उन्हें चिढ़ाने के लिए ही कही जा रही हैं क्योंकि उनके पति अफ़सर नहीं थे और आस-पड़ोस में केवल उन्हीं के बच्चे हिंदी माध्यम वाले सरकारी स्कूल मे पढ़ते थे।

पिछले सप्ताह सुनन्दन बाबू की पदोन्नति हो गई। वे अनुवादक से हिंदी अधिकारी बन गए। घर में सर्वाधिक हर्ष श्रीमती सुभद्रा को हो रहा था। अब महिला मंडली में वे भी रोब से कह सकेंगी कि उनके पति राजपत्रित अधिकारी हैं। समाज में उनका भी स्तर है।

अगले दिन जब महिला गोष्ठी में सुभद्रा जी की तरफ से चाय पिलाई गई तो सब जानने को उत्सुक थीं। श्रीमती सुनन्दन ने बताया कि उनके पति हिंदी अधिकारी हो गए हैं।

"यह क्या होता है?" श्रीमती जैन ने पूछा।

"अरी कुछ तो होता ही होगा। आखिर गजटेड पोस्ट है।" श्रीमती रस्तोगी बोल पड़ीं।

"तब तो पार्टी पक्की।"

"हाँ-हाँ ज़रूर !" सुभद्रा जी ने गर्व से निमंत्रण दिया। कुछ क्षण सोच कर पुन: बोलीं- "आप अगले महीने के पहले रविवार को सादर आमंत्रित हैं।"

"पहले इतवार को ही क्यों?"श्रीमती चौबे पूछ बैठीं।

गिरिजा जैन हंसकर बोली- "अजी सरकारी कर्मचारी महीने के पहले हफ़्ते ही साहूकार रहता है। उसके बाद तो पूरा महीना आर्थिक आपातस्थिति लगी रहती है।"

शीघ्र ही घर के पर्दे बदल गए क्योंकि क्या पता, कब कौन आ टपके? यद्यपि यह सब बहुत महँगा पड़ रहा था। पिछली नौकरी में जो कुछ बचाया, सब बराबर हो गया। सुनन्दन जी ने अपने लिए एक पतलून और दो नई कमीजें सिलाईं। असली महँगाई का आभास तो तब हुआ जब एक टी-सेट और मेज़पोश ख़रीदने में तीन सौ सत्तर रुपये लग गए। पर विवशता थी, क्या करें? अफ़सर हो गए तो अन्य कोई-न-कोई सहकर्मी अफसर भी घर पर आ सकता है। जब वे किसी के यहां जाएंगें तो उन्हें भी दूसरों को बुलाना पड़ेगा।

(क्रमश:)

*भारत-संदर्श के सौजन्य से

महत्वपूर्ण तिथियाँ

यहूदियों का चनुक्का/ हनुक्का त्योहार (१२-१९ दिसम्बर), इस्लाम धर्म के अनुयायियों के नव-वर्ष का आरम्भ/ अल हिजिरा (१८ दिसम्बर), बड़ा-दिन/ क्रिसमस (२५ दिसम्बर), १ जनवरी (नव-वर्ष), ५ जनवरी (गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म-दिवस), ७ जनवरी (कट्टरपंथी ईसाइयों की क्रिसमस), १४ जनवरी (मकर संक्रांति/लोहड़ी/पोंगल), १७ जनवरी (विश्व-धर्म दिवस), २० जनवरी (वसंत-पंचमी)।

सूचनाएँ

१. क्रिकेट खिलाड़ियों के लिये सुनहरा अवसर (दिसम्बर, २००९ से जनवरी २०१० तक)

जाटा (JATA) वर्ग द्वारा आयोजित २०-२० क्रिकेट प्रतिद्वंदिता में अपनी प्रतिभा दिखाइये और २० हज़ार डालर तक के पुरस्कार जीतने का अवसर प्राप्त कीजिये। इस प्रतियोगिता को 'क्रिकेट विक्टोरिया' का पूरा समर्थन प्राप्त है। अधिक जानकारी के लिये नव (फ़ोन न०-०३ ९६२९ ३९०५ अथवा १३०० ०० ५२८२ से सम्पर्क कीजिये या फिर निम्नलिखित पते पर ई-मेल भेजिये - cricket@jata.com.au

वेबसाइट - www.jatasports.com.au

२. इण्डियन सीनियर सिटीज़न्स एसोसिएशन आफ़ विक्टोरिया की बैठक तथा डा० आशा पाहुजा द्वारा 'स्वास्थ्य' विषय पर वार्ता

तिथि व समय - शनिवार, १६ जनवरी, सुबह के ११.३० बजे से आरम्भ।

स्थान - माउंट वेवर्ली यूथ सेन्टर, माउंट वेवर्ली। अधिक जानकारी के लिए डा० प्रेम फेकी को (०३) ९५६० ९६०७ अथवा डा० सुरेश शर्मा को (०३) ९८८७ ७२८९ पर फ़ोन कीजिए।

३. साहित्य-संध्या - अपने लोग, अपनी बातें (शनिवार, २३ जनवरी)

स्थान - फ़िलिस होर रूम, क्यू सिटी लाइब्रेरी, कोथम रोड और सिविक ड्राइव के नुक्कड़ पर क्यू-३१०१ (मेलवे संदर्भ ४५डी ६)

समय - रात के ७.३० बजे से १०.३० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये - नलिन शारदा (०४०२)१०८५१२

पिछली साहित्य-संध्या की फोटुओं तथा 'हिन्दी-पुष्प' के पुराने अंकों के लिये, निम्नलिखित वेबसाइट देखिये - http://sahityasangam. weebly.com/index.html

४. रविशंकर तथा उनकी पुत्री अनुश्का शंकर का सितार-वादन, तबले पर संगत तन्मय बोस।

तिथि व समय - शनिवार, २० मार्च, रात के ८.३० बजे से प्रारम्भ

स्थान - हैमर हॉल, विक्टोरियन आर्ट्स् सेन्टर, सेंट किल्डा रोड, मेल्बर्न

अधिक जानकारी के लिए, आर्ट्स् सेन्टर को १३०० १८२ १८३ पर फ़ोन कीजिये अथवा निम्नलिखित वेबसाइट देखिये - http://www.theartscentre.com.au / whats-on/event.aspx?id=1938

अब हँसने की बारी है

१. सैन्टा क्लॉज़ और दादी माँ

क्रिसमस के कुछ दिन पहले, दो भाई अपने बाबा-दादी के यहाँ गये हुए थे। रात में सोने से पूर्व, दोनों भाई, घुटनों के बल बैठ कर प्रार्थना करने लगे। थोड़ी देर में छोटा भाई बड़ी तेज़ आवाज़ में कहने लगा- " हे ईश्वर, सैन्टा क्लॉज़ से कहियेगा कि इस साल मेरे लिये उपहार में एक साईकिल लायें। बड़े भाई ने उस से पूछा -"ईश्वर बहरा नहीं है, जो इतनी ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना कर रहे हो"

छोटे भाई ने उत्तर दिया - " हाँ, लेकिन दादी माँ तो ऊँचा सुनती हैं।

२. देश की सरकार और उल्टा पैजामा

पति (पत्नी से) - यदि देश की सरकार मेरे हाथ में आ जाए तो मैं सब कुछ बदल दूँगा।

पत्नी (पति से) - तुम पहले अपना पैजामा तो बदल लो, सुबह से उल्टा पहने हुए हो।

३. नींद की गोली

पत्नी (पति से) - उठो, रात के दो बज गये।

पति (पत्नी से) - इतनी रात को क्यों उठाया?

पत्नी (पति से) - आप आज नींद की गोली लेना भूल गये थे।